नव भारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

नशीले पदार्थों का गढ़ बनता प्रदेश

मध्य प्रदेश लंबे समय तक शांति, संतुलन और सामाजिक सौहार्द के लिए जाना जाता रहा है, लेकिन हाल के वर्षों में राज्य के अलग-अलग हिस्सों से सामने आई नशीली दवाओं की फैक्ट्रियों की घटनाएं एक गंभीर चेतावनी बनकर उभरी हैं. रतलाम, आगर मालवा, भोपाल और उसके आसपास के औद्योगिक क्षेत्रों में हुई लगातार कार्रवाइयों ने यह साफ कर दिया है कि सिंथेटिक ड्रग्स का संगठित नेटवर्क अब राज्य की जड़ों में पैठ बनाने की कोशिश कर रहा है. यह स्थिति केवल कानून-व्यवस्था का सवाल नहीं है, बल्कि सामाजिक सुरक्षा और युवा पीढ़ी के भविष्य से जुड़ा गंभीर विषय है.

रतलाम के चिकलाना गांव में एक पूर्व विधानसभा प्रत्याशी के घर से एमडी ड्रग फैक्ट्री का पकड़ा जाना इस पूरे तंत्र की दुस्साहसिकता को उजागर करता है. सवाल यह नहीं है कि पुलिस ने कार्रवाई की, सवाल यह है कि इतनी बड़ी मात्रा में ड्रग्स और केमिकल लंबे समय तक कैसे तैयार होते रहे और स्थानीय प्रशासन को इसकी भनक तक क्यों नहीं लगी. इसी तरह आगर मालवा में नर्सरी की आड़ में चल रही लैब, भोपाल के इस्लामनगर और बगरौदा औद्योगिक क्षेत्र में सामने आए अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क इस ओर इशारा करते हैं कि अपराधी तंत्र ने निगरानी व्यवस्था की कमजोर कड़ियों को बखूबी पहचान लिया है. यह भी ध्यान देने योग्य है कि अब ड्रग्स की तस्करी से ज्यादा जोर स्थानीय स्तर पर निर्माण पर है. सुनसान गांव, बंद पड़ी फैक्ट्रियां, और औद्योगिक क्षेत्रों में ढीली निगरानी अपराधियों के लिए सुरक्षित ठिकाने बनते जा रहे हैं. कीटनाशक और फार्मास्यूटिकल के नाम पर केमिकल की आसान उपलब्धता और तकनीकी जानकारी रखने वाले लोगों की संलिप्तता ने इस कारोबार को और खतरनाक बना दिया है.

यहां आलोचना पुलिस और प्रशासनिक तंत्र की कार्यप्रणाली पर स्वाभाविक रूप से होती है. अक्सर बड़ी कार्रवाई तब होती है जब केंद्रीय एजेंसियां सक्रिय होती हैं या मामला राष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियों में आ जाता है. स्थानीय स्तर पर खुफिया तंत्र की सक्रियता, नियमित निरीक्षण और संदिग्ध गतिविधियों पर त्वरित कार्रवाई का अभाव साफ नजर आता है. सवाल यह भी उठता है कि क्या थाना स्तर से लेकर जिला प्रशासन तक सूचनाओं के आदान-प्रदान में कहीं न कहीं गंभीर चूक हो रही है.

हालांकि, यह भी सच है कि जब मामले सामने आए, तब राज्य पुलिस ने केंद्रीय एजेंसियों के साथ मिलकर बड़ी और निर्णायक कार्रवाइयां कीं. एंटी ड्रग स्क्वाड को सक्रिय किया जाना और लगातार छापेमारी यह दिखाती है कि चुनौती को गंभीरता से लिया जा रहा है. जरूरत इस बात की है कि कार्रवाई केवल 'घटना के बाद' तक सीमित न रहे, बल्कि 'घटना से पहले' रोकने की रणनीति मजबूत हो. ड्रग्स का यह नेटवर्क केवल अपराध नहीं, बल्कि सामाजिक बीमारी है. इसके दुष्परिणाम सीधे युवाओं, परिवारों और कानून-व्यवस्था पर पड़ते हैं. इसलिए पुलिसिंग के साथ-साथ प्रशासनिक निगरानी, स्थानीय स्तर पर जवाबदेही और समाज की भागीदारी बेहद जरूरी है. यदि समय रहते निगरानी तंत्र को मजबूत नहीं किया गया, तो मध्य प्रदेश की पहचान पर यह खतरा और गहराता जाएगा.

आज जरूरत है सजग प्रशासन, सतर्क पुलिस और जागरूक समाज की, ताकि मध्य प्रदेश नशे के गढ़ के रूप में नहीं, बल्कि सुरक्षित और जिम्मेदार राज्य के रूप में जाना जाए. हालांकि यह संतोषजनक है कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने इन घटनाओं को गंभीरता से लिया है और पुलिस तथा प्रशासन को फ्री हैंड देते हुए कड़ी कार्रवाई की हिदायत दी है.

एसआइआर प्रक्रिया | सिस्टम जेनरेटेड तकनीकी त्रुटि!

राजीव खण्डेलवाल

> चुनाव आयोग का 24 जून 2025 का ''एसआइआर'' करने का संविधान के अनुच्छेद 324 एवं (जन प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 की धारा 21) एवं सहपठित ''निर्वाचक पंजीकरण नियम 1960'' के तहत जारी आदेश (क्र. 23/2025) द्वारा बिहार में ''एसआइआर'' विशेष गहन पुनरीक्षण के आदेश जिसमें 01.07.2025 अर्हता तारीख थी. उसी आदेश में यह भी उल्लेख किया गया था कि बिहार में आखिरी बार वर्ष में 2003 ''आइआर'' (गहन पुनरीक्षण) किया गया था, ध्यान रखियेगा, ''एसआइआर'' का उल्लेख नहीं था. वर्ष 2003 में अर्हता 1.1.2003 निश्चित की गई थी. उक्त प्रक्रिया में भी तत्समय मौजूद मतदाता सूची को ही आधार बनाया गया था, जिसके सत्यापन की कार्रवाई ''बीएलओ'' द्वारा की गई थी. ''नई मतदाता सूची नहीं बनाई गई थी''. दस्तावेज सिर्फ नये आवेदको से भी मांगे गये थे. तथ्य यह है कि वर्ष 1952 के बाद नई मतदाता सूची बनाने के लिए पहली बार एसआइआर वर्ष 2025 में हुई है. इसके पूर्व कदापि नहीं हुई.

नोबेल पुरस्कार विजेता और 'भारत रत्न' से अलंकृत प्रो. अमर्त्य सेन, तथा देश की समुद्री सीमाओं के रक्षक रहे पूर्व नौसेना प्रमुख एडमिरल अरुण प्रकाश और उनकी पत्नी को चुनाव आयोग की ओर से विशेष गहन पुनरीक्षण (सर) के दौरान सिस्टम जनरेटेड नोटिस भेजा गया—जिसमें उनसे कहा गया कि वे अपनी पहचान और नागरिकता साबित करने के लिए उपस्थित हों. कानून के समक्ष सब समान हैं—यह लोकतंत्र की रीढ़ एवं आत्मा है. क्या देश को यह जांच करनी है कि अमर्त्य सेन कहीं चुपचाप किसी और देश के नागरिक तो नहीं बन गए? क्योंकि यह कल्पना करना देश में वर्तमान में संभव है. वह इसलिए की आजकल जो चलन (ट्रेंड) चल रहा है, वर्तमान समय में देश की नागरिकता छोड़ने की सबसे ज्यादा संख्या है. वर्ष 2020 से संख्या लगातार बढ़कर 2024 में ही 216719 लोगों ने नागरिकता छोड़ी.

चुनाव आयोग ने सफाई दी— यह तो सिस्टम जनरेटेड तकनीकी त्रुटि है. अर्थात अब भारत में गलती किसी की नहीं, दोषी सिर्फ सिस्टम है. बीएलओ तीन बार एडमिरल अरुण प्रकाश के घर गए. तब दस्तावेज नहीं मांगे गए. फिर अचानक नोटिस में दस्तावेजों की मांग! यानी—पहले जांच बिना जांच. फिर नोटिस बिना विवेक. और अंत में सुधार बिना माफी.

धारा 21 में मतदाता सूची में तीन तरह के पुनरीक्षण के प्रावधान है. संक्षिप्त रूप से या गहनता से, सामान्य संशोधन, विशेष संशोधन तथा सतत संशोधन. धारा 21(2) (ए) (.) सहपठित नियम 25 के अंतर्गत सामान्य आम चुनाव होने के पूर्व निर्वाचक नामावली पुनरीक्षण किया जायेगा. धारा 21 (3) के अंतर्गत विशेष पुनरीक्षण (विशेष गहन पुनरीक्षण का नहीं) का प्रावधान है, जो किन्हीं लोकसभा/विधानसभा क्षेत्र के लिए हैं, ''पूर्ण राज्य'' के लिए कदापि नहीं. इस प्रकार चुनाव आयोग का ''अंधा बांटे रेवड़ी'' वाला 24 जून का आदेश कानून व तथ्यात्मक दोनों रूप से गलत है.

वर्तमान एसआइआर सिर्फ संशोधन की प्रक्रिया नहीं रह गई हैं, बल्कि पुरानी मतदाता सूची को व्यवहारिक व कार्य रूप में ''अस्तित्वहीन'' व निष्प्रभावी कर नई मतदाता सूची बना रही है. इसका कोई प्रावधान संविधान या जन प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 में नहीं है. फिर ''एसआइआर'' पर करोड़ों रुपए व समय खर्च कर निर्दोष बीएलओ की आहुति देकर ''घर फूंक तमाशा देखने का'' क्या मतलब है? अनुच्छेद 324 मतदाता सूची तैयार करने का अधिकार अवश्य देता है. परन्तु मतदाता सूची कैसे बनेगी, यह धारा 21 में वर्णित है, जिसमें स्क्रैक का उल्लेख कही भी नहीं है.

स्वतंत्र भारत की पहली निर्वाचक नामावली प्रथम आम चुनाव 1951-52 के लिए तैयार की गई थी, जिसका 15 नवम्बर 1952 को प्रकाशन हुआ था. वर्ष 1951 से लेकर वर्ष 2024 तक चुनाव आयोग नामावली में संशोधन-मृत्यु, दोहराव व मतदाता स्थानांतरण के आधार पर करती आ रही है, अर्थात आधार वर्ष 1951 को सूची मान्य होकर समय-समय पर संशोधित होती रही सूची ही मतदाता सूची ही किसी भी एसआर की कार्रवाई के लिए आधार रही है. इसके ही आधार पर चुनाव कराये जाते रहे है. इसका क्या एक अर्थ यह नहीं निकाला जाना चाहिए कि पूर्व में स्क्रैन किये जाने के कारण अभी तक हुए समस्त चुनाव अवैध है? आखिर एसआर व एसआइआर में अंतर क्या है? जिनको स्पष्ट करने में चुनाव आयोग असफल रहा है. एसआइआर में चुनाव आयोग पुरानी सूची नई सूची बना कर प्रतिस्थापना कर रहा है, जो पूर्णतः गैर संवैधानिक और गैर कानूनी है. स्पष्ट है कि ''बनाने चले थे गणपति और बन गया शिवलिंग''. कही ऐसा नहीं कि ''एसआइआर'' की कार्रवाई ''चमड़े के सिक्के'' चलाने समान हो जावे. मतदाता सूची की शुद्धता आवश्यक है—इससे कोई विवाद नहीं.

एक पते पर सैकड़ों नाम, एक ही फोटो का कई बार उपयोग. लेकिन सवाल यह नहीं कि गलतियाँ हैं या नहीं, सवाल यह है कि क्या पूरी प्रक्रिया संवैधानिक है?

(लेखक, कर सलाहकार एवं पूर्व अध्यक्ष, बैतूल नगर सुधार न्यास)

विंध्य की डायरी

राजनीतिक नियुक्तियों की अटकलों के बीच विंध्य को उम्मीदें

डॉ. रवि तिवारी

एक बार फिर निगम-मंडलो में राजनीतिक नियुक्तियों को लेकर अटकलें तेज हो गई है. दरअसल मकर संक्रांति के बाद नियुक्तियों पर अंतिम मोहर लगेगी ऐसी चर्चा भाजपा के अंदर है. जिस प्रकार से विंध्य ने भाजपा के प्रति पूर्ण समर्थन व्यक्त किया है उसके बाद से यह कयास लगाए जा रहे है कि राजनीतिक नियुक्तियों में विंध्य को विशेष महत्व मिल सकता है. इसके लिये सक्षम नेताओं ने अपनी पूरी ताकत लगा रखी है. मुख्य धारा से अलग हुए बड़े नेताओं को जिम्मेदारी मिलने की उम्मीद है. भाजपा ने राजनीतिक नियुक्तियों की अपनी रणनीति में बदलाव कर दिया है. पार्टी पहले कई किस्तों में राजनीतिक नियुक्तियां करना चाहती थी लेकिन केंद्रीय नेतृत्व से मिले निर्देश के बाद सभी दर्जा प्राप्त मंत्रियों की सूची एक साथ निकाली जाएगी. इससे पहले पार्टी की तैयारी थी कि प्रदेश के सभी विकास प्राधिकरण और क्षेत्रीय विकास प्राधिकरण जैसे विंध्य, बुंदेलखंड, महाकौशल विकास प्राधिकरणों में अध्यक्ष-उपाध्यक्षों की नियुक्ति पहली किस्त में करने की तैयारी थी. सूची को अंतिम रूप दिया जा चुका था. इस बीच मुंबई और महाराष्ट्र की नगर सरकारों के चुनाव आ जाने के कारण केंद्रीय नेतृत्व से समय नहीं मिल पाया था. अब संभावना है कि अगले सप्ताह बड़े नेताओं की बैठक में इसे अंतिम रूप दे दिया जाएगा. दरअसल, विधानसभा चुनाव-2023 के बाद से ही निगम-मंडलों में राजनीतिक नियुक्तियों को लेकर संगठन पर दबाव है. पहले तो लोकसभा चुनाव के बाद राजनीतिक नियुक्तियां करने की योजना थी लेकिन पहले भाजपा के संगठन चुनाव फिर प्रदेश, अध्यक्ष और राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव में विलंब के कारण मामला टलता रहा. बिहार चुनाव के बाद राजनीतिक नियुक्तियों का मामला आगे बढ़ा लेकिन फिर भी कोई निर्णय नहीं हो पाया. हालाकि अब जल्द ही राजनीतिक नियुक्तियों को अंतिम रूप दिया जायेगा ऐसी चर्चा चल रही है. देखना यह है कि विंध्य को कितना महत्व मिलता है.

...जब नाराज सांसद बोले

जनता के हितो से जुड़े विकास कार्य जब सही तरीके से नही होते तो उंगली जनप्रतिनिधि पर ही उठाई जाती है और जनता के गुस्से का सामना जनप्रतिनिधि को ही करना पड़ता है. सतना के सांसद गणेश सिंह जिला विकास समन्वय और निगरानी समिति (दिशा) की बैठक में भडक् उठे. दरअसल सांसद ने नगर निगम स्मार्ट सिटी के कार्यो की समीक्षा के दौरान साइकिल ट्रैक की दुर्दशा पर नाराजगी जाहिर की और गुस्से में कहा, साइकिल ट्रैक का नाम बदल कर आप लोग अब सब्जी मंडी ट्रैक कर दो. फिर क्या था सांसद जी का गुस्सा देख अधिकारी भी अगल-बगल ताकने लगे. सांसद जी का कहना था कि करोड़ो रूपये खर्च कर दिये गये जनता की सुविधा के लिये और आप लोग इसकी उपयोगिता साबित नही कर पाए. निगम अफसर के जवाब ने सांसद के गुस्से को सातवें आसमान में पहुंचा दिया और जमकर खरीखोटी अफसरो को सुनाई.

महापौर-अध्यक्ष आमने-सामने

रीवा में भाजपा और कांग्रेस में विकास कार्य का श्रेय लेने को लेकर एक बार फिर टकराव सामने आया है. दोनो ओर से संजय नगर की सडक् बनवाने के दावे किये गये है. शहर के दो वार्डो को जोडने वाली सडक् का भूमि पूजन एक ही दिन अलग-अलग समय में हुआ. महापौर और अध्यक्ष आमने-सामने आ गये है. दरअसल महापौर अजय मिश्रा बाबा की मौजूदगी में सुबह 11 बजे भूमि पूजन कार्यक्रम निर्धारित था. इस बात की जानकारी भाजपा नेताओं को हुई तो निगम अध्यक्ष व्यंकटेश पाण्डेय को बुलाया गया. साथ में कई वार्डो के पार्षद और पदाधिकारी ने पहुंचकर भूमि पूजन किया. इसके बाद अपने निर्धारित समय पर महापौर पहुंचे और वरिष्ठ नागरिक के हाथ से नारियल तोड़ कर भूमि पूजन कराया. महापौर और अध्यक्ष भले ही राजनीतिक जीवन में विरोधी नजर आते है लेकिन निजी जीवन में दोनो के बीच बेहद ही मधुर संबंध के साथ पारिवारिक रिश्ते है. राजनीतिक और निजी जीवन में बेहतर तालमेल दोनो के बीच वर्षो से है, राजनीतिक मुद्दो को लेकर भले ही दोनो के बीच टकराव रहता है लेकिन निजी जीवन में मधुर संबंध है, यही लोकतंत्र की खूबसूरत तस्वीर है.

चुनाव आयोग का अजब तमाशा

इस हाई टेक युग में भी चुनाव आयोग ने जिस तरह की आपाधापी और अव्यवस्था में महापालिका चुनाव कराए हैं, वह किसी तमाशे से कम नहीं है. यह एक ऐसा प्रहसन बन गया मानो हम किसी बीते युग में जा पहुंचे जहां सिस्टम का नाम ही नहीं था. यह विस्मयजनक है कि पोलिंग के बाद कहां कितना मतदान हुआ, इसके आंकड़े जारी किए बगैर ही वोटों की काउंटिंग शुरू कर दी गई. कहीं वोटिंग 50 प्रतिशत पर अटक गई जो हेरफेर के बाद 2 या 3 प्रतिशत बढ़ी. इस बार अमिट स्याही एकदम फीकी और मिटनेवाली लगाई गई जो तुरंत उतर गई. ऐसा क्यों हुआ जबकि लोकसभा-विधानसभा चुनाव में बाएं हाथ की तर्जनी पर लगी स्याही लगभग 2 माह तक पूरी तरह नहीं उतरती. इस बार मार्कर से स्याही लगाई गई. कई जगह वोटर अपना कार्ड लेकर पहुंचे लेकिन सूची से नाम गायब था. कुछ का नाम दूसरे वार्ड में डाल दिया गया जिससे उन्हें व्यर्थ ही भागदौड़ करनी पड़ी या वापस लौटना पड़ा. कई केंद्रों पर तकनीकी खराबी की वजह से कंट्रोल यूनिट व बैलेट यूनिट को बदलना पड़ा. लोग आदत के अनुसार उस मतदान केंद्र पहुंचे जहां उन्होंने लोकसभा और विधानसभा के लिए वोटिंग की थी. वहां जाने पर पता चला कि इस बार केंद्र बदल दिया गया है. बुजुर्ग मतदाताओं को अच्छी-खासी परेशानी झेलनी पड़ी. गजब तो यह हुआ कि वोटर लिस्ट में सुधार का दावा करनेवाले चुनाव विभाग ने पति और पत्नी का नाम 2 अलग-अलग मतदान केंद्रों में कर दिया. कई चुनाव करवा चुके एक रिटायर्ड चुनाव अधिकारी का नाम सूची से गायब था जबकि उनकी पुणे में रहनेवाली बेटी का नाम नागपुर की सूची में था. उन्हें शिकायत करने के लिए वरिष्ठ अधिकारी का नंबर भी नहीं दिया गया. आज हर व्यक्ति के पास मोबाइल फोन रहता है जिसे बाहर रखने को कहा गया. आखिर लोग किसके भरोसे मोबाइल बाहर रखते? कई मशीनों में प्रभाग बदल गया था और सीरियल से उम्मीदवारों के नाम नहीं थे. मतदाताओं के नाम में या सरनेम में टाइपिंग की गलती या अधूरा नाम रहने की समस्या भी देखी गई. यह आम शिकायत रही कि कहीं बूथ बदला तो कहीं प्रभाग. डबल नामों की समस्या अब भी कायम रही.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

राजनीति में यही बड़ा कष्ट एक दूसरे को बताते भ्रष्ट

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, जब देश आजाद हुआ था तब प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि भ्रष्टाचारियों को बिजली के खंबे से लटकाकर फांसी दे देनी चाहिए. अंग्रेजी में उनके शब्द थे- करप्ट शुड बी हैंग्ड बाय फर्स्ट लैंप पोस्ट! इसके बाद बिजली के खंबे तरसते रह गए, एक भी भ्रष्टाचारी को फांसी नहीं हुई! इसके बाद 2 बार भारत के कार्यवाहक प्रधानमंत्री और अनेक वर्षों तक केंद्रीय गृहमंत्री रहे गुलजारीलाल नंदा ने देश में सदाचार आंदोलन चलाया था. उनकी सभाओं में 40-50 से ज्यादा लोग नहीं जाते थे. जब नंदा का निधन हुआ तो उन पर मकान का कई महीनों का किराया बकाया था. ईमानदार गृहमंत्री स्वयं का गृहप्रवेश भी नहीं कर पाए! भ्रष्ट अधिकारियों व कर्मचारियों ने 1 नोट की बजाय 4 नोट मांगते हुए बेशर्मी से कहा कि सदा 4 की सलाह नंदा ने दी है.'

हमने कहा, 'विकास के साथ भ्रष्टाचार जुड़ा हुआ है. मंत्री, अधिकारी व पूरा महकमा पैसे खाता है तब कहीं जैसा-तैसा विकास हो पाता है. भारत के विकास में भ्रष्टाचार का योगदान विषय पर पीएचडी की जा सकती है. जब विकास नहीं हुआ था तो आजादी के समय 1 रुपया और 1 डॉलर बराबर थे. आज लगभग 90 रुपए का 1 डॉलर हो गया है. विकास की कीमत इस तरह चुकानी पड़ती है. नेता मस्त हैं और किसान हालात से पस्त होकर आत्महत्या कर रहे हैं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हैरत की बात है कि महायुति सरकार के नेताओं ने महापालिका चुनाव प्रचार के दौरान एक-दूसरे के भ्रष्टाचार की पोल खोली. अजीत पवार ने कहा कि 1995-99 में शिवसेना-बीजेपी की सरकार थी. चुनाव हारने से सत्ता छिन गई. फिर कांग्रेस-एनसीपी की सरकार बनी जिसमें मुझे कृष्णा घाटी विकास निगम की जिम्मेदारी मिली. तब पुरंदर लिफ्ट इरिगेशन की लागत 330 करोड़ बताई गई थी. मैंने पिछली सरकार की इस योजना को रद्द कर दिया और नया टेंडर 220 करोड़ में पास किया. मुझे मालूम पड़ा कि उसमें 100 करोड़ रुपए पार्टी फंड के नाम पर तथा 10 करोड़ अधिकारियों की रिश्वत के नाम पर थे. बीजेपी के भ्रष्टाचार की फाइल आज भी मेरे पास मौजूद है. इस पर शिवसेना नेता शाहजी बापू पाटिल ने कहा कि पाचगांव में टनेल बनाने के लिए बीजेपी ने 350 करोड़ का टेंडर निकाला था जबकि अजीत ने इसकी लागत बढ़ाकर 1,850 करोड़ रुपए कर दी. इनके भी हाथ साफ नहीं हैं.'

हमने कहा, 'भ्रष्टाचार में तेरी भी चुप मेरी भी चुप रहनी चाहिए. आखिर बिल्ली भी तो आंख मूंद कर दूध पीती है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12145 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2	■	3		4	■	5
6		■		■	7	8	
■		■	9	10			
11			■	12			■
13		■	14			■	15
16		17	■		■	18	
	■	19	20		21		■
22				■	23		

ऊपर से नीचे
1. हृदय, मन, जी, हौसला (उर्दू) 2. देखने में सुंदर 3. प्रज्वलित करना, आग लगाना 4. नमक निकालने या बनाने का स्थान (उर्दू) 5. कीर्तिगायक, भाट (सं.) 8. निपटाना, बनाना 10. सहायक, सहायता करने वाला 11. अमृत का समुद्र (सं.) 15. तस्वीर, रेखाओं अथवा रंगों द्वारा बनी हुई किसी वस्तु की आकृति 17. नष्ट किया हुआ (सं.) 18. किसी कार्य का अपनी ओर से आरंभ 20. समय, मृत्यु 21. दुर्वचन, कलंकपूर्ण आरोप, गंदा

बाएं से दाएं
1. सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय 3. युवा, तरुण 6. धुन, गीत गाने का सुंदर ढंग 7. मगर या घड़ियाल, बारह राशियों में से एक 9. नाम रखने का काम या संस्कार 11. ऐसा समय जिसमें भोजन खूब मिले तथा अन्न की उपज पर्याप्त हो, सुकाल (सं.) 12. बिछाना 13. प्रवाह, किसी दिशा में किसी वस्तु या तत्व का निरंतर प्रवाहित होना, दफा 14. रूपवान, खूबसूरत 16. प्रतियोगिता, भेंट, मुलाकात 18. चिट्ठी, खत, पर्ण 19. शिकार खेलने की जगह (उर्दू) 22. पृथ्वी के नीचे के लोकों का छठा लोक 23. निगलना

Solution 12144

पो	त	दा	र	■	क	स	क
र	■	खि	■	म	हा	र	त
ब	गा	ल	■	ग	■	का	रा
द	र	■	अं	ध	का	र	■
र	त	ज	गा	■	श्त	■	क
■	■	वा	र	दा	त	■	बू
ग	वा	ह	■	व	का	ल	त
■	त	र	ब	त	र	■	र

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा प्रतियोगिता मेंसफलता मिलेगी, आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, वर्ष के मध्य में शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा, अधिकारियों का कानूनी मामलों में मेलजोल बढ़ेगा, वर्ष के अन्त में यात्रा कष्टदायक हो सकती है, दाम्पत्य जीवन का निर्वहन होगा, व्यस्तता रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शासन सत्ता का सुख मिलेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों की शिक्षा में सफलता मिलेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को कानूनी मामलों में व्यस्तता रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को यात्रा में कष्ट हो सकता है, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को अधिकारियों से मेलजोल बढ़ेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को उतावलेपन में हानि हो सकती है, सावधानी रखकर कार्य करना हितकर रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य शांतिप्रिय, होगा. अपने कार्यो के प्रति सजग रहने वाला न्यायप्रिय ईमानदार होगा. कला और साहित्य आदि में विशेष लगाव रहेगा. धार्मिक आस्था अच्छी रहेगी. जीवन में सुखी रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

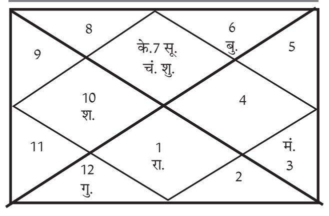

पंचांग

रा.मि. 29 संवत् 2082 माघ शुक्ल प्रतिपदा चन्द्रवासरे रात 1/59, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे दिन 12/5, वज्र योगे रात 9/17, किंस्तुघ्न करणे सू.उ. 6/41, सू.अ. 5/19, चन्द्रचार मकर, पर्व- गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, शु.रा. 10,12,1,4,5,8 अ.रा. 11,2,3,6,7,9 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

माघ शुक्ल प्रतिपदा को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, स्टील, जौ, गेहूँ, ज्वार के भाव में नरमी का रूख रहेगा. गुड़ खांड, शक्कर, सरसों, अरंडी, के भाव में नरमी रहेगी. उसके बाद तेजी का योग है. भाग्यांक 3721 है.

मेष- मनमौजी सोच आपके लिये नुकसानदायक हो सकती है. पारिवारिक विवादों को टालें. स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें. रोजगार की प्राप्ति होगी.

वृषभ- सपने साकार करने का समय है, परिश्रम की कटौती न करें. अड़चने धीरे धीरे सुलझेंगी. विलासिता की वस्तुओं का संग्रह होगा. प्रिय व्यक्ति से भेंट होगी.

मिथुन- कार्य की दृष्टि से खुद को पहिले से अधिक चुस्त दुरूस्त महसूस करेंगे. परिश्रम अधिक करना होगा, नया खर्च सामने आ सकता है.

कर्क- रूका हुआ धन मिलने के आसार हैं, कार्यक्षेत्र में नई चुनौतियों का सामना करना पडेगा. सामाजिक कार्य में संलग्नता रहेगी. आर्थिक समस्या का समाधान होगा.

सिंह- वैवाहिक चर्चाओं में सफलता मिलने से युवा वर्ग उत्साहित रहेगा. महत्वपूर्ण कामकाज बनेगा. माता पिता के सहयोग से समस्याएं हल होंगी.

कन्या- महत्वपूर्ण कार्य शुरू करने में देरी से लाभ मिलना मुश्किल है. मांगलिक कार्य बनेगा. सुख वैभव ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी. निजी पुरूषार्थ बना रहेगा.

तुला- युवाओं का ध्यान मौज मस्ती पर रहेगा. खानपान की गड़गड़ी से सेहत बिगड़ेगी. संयम रखकर कार्य करें. व्यर्थ के विवाद से बचें. निजी कार्यो की रूपरेखा बनेगी.

वृश्चिक- पारिवारिक योजनाओं में बढ़ चढकर हिस्सा लेंगे. लक्ष्य प्राप्ति के विशेष प्रयत्न आवश्यक है. व्यापार व्यवसाय में सावधानी रखें. व्यर्थ के विवाद से बचें.

धनु- धार्मिक कार्यों में आस्था बढ़ेगी. पिछले अनुभवों से सबक लेकर वृश्चिके बढ़े. सतर्कता से कार्य करें. नौकरी में तरक्की होगी. कामकाज पूरा होगा.

मकर- किसी कार्य को लेकर मन में दुविधा रहेगी. अधिकारी वर्ग खुश रहेगा. शिक्षा संतान के कार्य में सफलता मिलेगी. अनायास शुभ प्रसंग सामने आ सकता है.

कुम्भ- मित्रों से किया वादा पूरा न करने का मलाल रहेगा, आय में बढ़ोत्तरी के आसार हैं. लोकप्रियता में वृद्धि होगीं . आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति होगी.

मीन- अचानक नई परेशानियां हैरान कर सकती हैं. विरोधियों से सतत्र रहकर कार्य करें. धार्मिक यात्रा का प्रोग्राम बन सकता है. नजदीकी सहयोग मिलेगा.

SUDOKU 7277

		8				1	5	
2					1	8		
3			4		6	7		9
5					9			
	9		2	3	4		7	
			1					8
4		7	6		5			1
		6	7					4
	5	3				2		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7276

3	9	7	5	2	1	4	8	6
5	4	2	9	6	8	7	1	3
8	6	1	3	7	4	9	5	2
2	8	9	1	5	3	6	4	7
4	7	3	2	8	6	5	9	1
6	1	5	4	9	7	2	3	8
9	3	4	7	1	2	8	6	5
7	5	6	8	3	9	1	2	4
1	2	8	6	4	5	3	7	9